उपसंहार

विश्व विख्यात ब्रिटिश नाटककार विलियम शेक्सपियर ने अड़तीस नाटकों की रचना की। जिनमें से अधिकांश को कालजयी माना जाता है। वे एक अद्वितीय नाटककार हैं जिन्होंने अपने नाटकों में सभी वर्गों, भावों और स्थितियों का सशक्त चित्रण किया है। इस विषय में ऐसा कहा जाता है कि मानो उन्होंने अनेक जीवन स्वयं जिया हो अन्यथा राजा से लेकर भिखारी तक; किसान से लेकर व्यापारी तक; और महिला चरित्रों का भी बहुत ही स्वाभाविक चित्रण किसी एक व्यक्ति द्वारा असंभव ही लगता है। उन्होंने अपनी लेखनी से कई चरित्रों को अमर बना दिया है।

शेक्सपियर के जीवन का प्रारम्भिक वर्षों की जानकारी ईसा मसीह के जीवन की तरह ही रहस्यों के घेरे में रही, इसलिए उस विषय में कई किवदंतियाँ चल पड़ी। लेकिन उनके जन्म स्थान का स्थानीय रिकॉर्ड, उनके जीवन में हुए छोटे-मोटे विवादों से संबंधित न्यायिक रिकॉर्ड, उन्होंने जिस नाटक कंपनी में काम किया था और मालिक बने थे, उससे संबंधित रिकॉर्ड के आधार पर उनके जीवन का सच जानने का प्रयास किया गया। इस आधार पर यह स्पष्ट हुआ है कि शेक्सपियर का जन्म शायद 24 अप्रैल 1564 को ब्रिटेन में वर्विकशायर के स्ट्रेटफोर्ड-ऑन-एवॉन में जॉन शेक्सपियर और मेरी आर्डन के घर हुआ था। वे अपने भाई-बहनों में तीसरे स्थान पर तथा प्रथम पुत्र थे। 18 वर्ष की उम्र में उनका विवाह उनसे कई साल बड़ी अन्ने हैथवे से हुआ। उनके दो बेटियाँ और एक बेटा हुआ। छोटी बेटी जूडिथ और बेटा हैमनेट जुड़वा थे। हैमनेट की मृत्यु ग्यारह साल में ही हो गई।

विवाह के बाद के दशक में शेक्सपियर क्या करते थे यह स्पष्ट रूप से पता नहीं चला है। कुछ साक्ष्यों यह पता चला है कि 1580 के बाद वे लंदन में अभिनेता बन गए थे और उससे पहले गाँव में अध्यापन करते थे। प्रारंभ में लंदन में एक नाटक कंपनी में घोड़ों की देखभाल का काम करने वाले शेक्सपियर अपनी प्रतिभा के बदौलत अभिनेता और नाट्यलेखक बन गए, तो चतुराई और दूरदर्शिता के बदौलत नाटक कंपनी के अंशधारी। अपने जीवन में उन्होंने प्रचुर प्रसिद्धि और धन अर्जित किया। शेक्सपियर उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति नहीं थे जैसाकि उनके समकालीन अन्य नाटककार थे। लेकिन उन्होंने उन सभी नाटककारों से अधिक सफलता पाई।

शेक्सपियर जब नाट्यलेखन कर रहे थे तो वह काल युरोप में पुनर्जागरण का था। पुनर्जागरण में यह आग्रह था कि पूर्व में हुए सांस्कृतिक ह्रास को महान प्राचीन युनानी और रोमन सभ्यता से प्रेरणा लेकर पुनर्जीवित किया जाए। इस क्रम में रचनाकार उन सभ्यताओं की कालजयी रचनाओं के जैसी रचना करने का प्रयास कर रहे थे। इसलिए उनकी रचनाओं में उन सभ्यताओं की विशेषताओं के साथ खामियां भी आ जाती थी। खामियां, उपरोक्त सभ्यताओं की रचनात्मक रूढ़ियों के रूप में थी। नाटक के क्षेत्र में भी पुनर्जागरणकालीन, शेक्सपियर के पूववर्ती और समकालीन लगभग सभी नाटककार प्राचीन युनानी और रोमन नाटकों की रूढ़ियों का पालन करते थे। इससे नाटक अच्छे तो होते थे लेकिन उसका प्रभाव सीमित हो जाता था। दर्शकों में एक उब सी पैदा होती थी। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है 'संकलन-त्रय' का अनुपालन। शेक्सपियर ने अपने नाटकों में संकलन-त्रय का उल्लंघन किया जिससे कथानक की व्यापकता बढ़ गई।

शेक्सपियर के समय रंगमंच का स्वरूप बदल चुका था, वे स्वयं अभिनेता भी थे और निर्देशक भी। स्पष्ट है कि वे रंगमंच की बारीकियों, सीमाओं और सम्भावनाओं को अच्छी तरह समझते थे। इसलिए नाट्यलेखन में नए प्रयोग समुचित ढंग से कर सके। शेक्सपियर अपने नाटक, नाटक कंपनी के लिए लिखते थे, जिसका एक मात्र लक्ष्य मंच पर उसका प्रदर्शन होता था। प्रदर्शन तभी सफल होता है जब दर्शक उससे जुड़ पाएं। इसके लिए आवश्यक है कि हम गंभीर बात कहने के क्रम में भी मनोरंजन के लिए अवकाश निकाल लें। शेक्सपियर ने अपने नाटकों में इस बात का पूरा ध्यान रखा। इसलिए उनके नाटकों में हर्ष-विषाद का सुंदर संगुम्फन मिलता है।

शेक्सपियर के नाटकों में अनेक स्थानों और कालों की घटनाओं को दिखाना; बहुस्तरीय संघर्ष की योजना, मानसिक अंतर्द्वंद को क्रिया-प्रतिक्रिया के अतिरिक्त कार्य रूप में दिखाना; सुंदर एवं सारगर्भित संवाद योजना और अधिकांश नाटकों की सर्वकालिक प्रासंगिकता आदि विशेषताओं के कारण उनके नाटक मंच के साथ-साथ सिनेमा के लिए भी उपयुक्त और लोकप्रिय साबित हुए। सिनेमा के शुरुआती चरण में ही उनके नाटकों का फिल्मांकन शुरू हो गया था। 'गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस' के अनुसार अब तक शेक्सपियर के नाटकों पर फीचर लेंथ और टीवी वर्जन मिलाकर कुल 410 फिल्में बन चुकी हैं। इस प्रकार शेक्सपियर किसी खास भाषा के वैसे लेखक के रूप में स्थापित हैं जिनकी रचनाओं पर सबसे अधिक फिल्में बनी हैं।

शेक्सपियर के नाटकों पर जो फिल्में बनी हैं उसमें सबसे पुरानी उपलब्ध फिल्म है – 1899 में 'किंग जॉन' पर बनी फिल्म। यह फिल्म किंग जॉन के मृत्यु का दृश्य है। चूँकि इससे पुरानी कोई फिल्म उपलब्ध नहीं है, इसलिए इसी फिल्म को उनके नाटक पर बनी फिल्म का पहला उदाहरण माना जाता है। शेक्सपियर के लगभग 18 नाटक फिल्म के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। उन नाटकों में से अधिकांश पर मूक युग में ही फिल्में बन चुकी थी। शेक्सपियर के नाटकों पर बनी पहली फुल लेंथ फिल्म 1912 में बनी रिचर्ड तृतीय थी, तो पहली बोलती फिल्म 1936 में पॉल सिजनर ने 'एज यू लाइक इट' बनाई थी। विश्व सिनेमा के इतिहास में 1944 से लेकर 1970 तक का कालखंड शेक्सपियर के नाटकों के फिल्मांतरण का स्वर्णयुग कहा जाता है तो ब्रिटिश फिल्मकार लार्ड लारेंस आलिवर, जापानी फिल्मकार अकिरा कुरोसावा, रूसी फिल्मकार ग्रेगरी कॉजिन्तेव और अमेरिकी फिल्मकार जॉर्ज ओर्सेन वेल्स को महत्वपूर्ण फिल्मकार। विश्वभर में शेक्सपियर के नाटकों पर बनी पचास उत्कृष्ट फिल्मों में इन फ़िल्मकारों की फिल्में शामिल हैं।

भारत में शेक्सपियर के नाटकों पर बनी फिल्मों में पहली फिल्म 'दिल फ़रोश' थी। यह एक मूक फिल्म थी जिसे 1927 में एक्सेल्सियर फिल्म कंपनी ने बनाया था, निर्देशक थे उदवाडिया। 1935 में सोहराब मोदी द्वारा बनाई गई फिल्म 'खून का खून' शेक्सपियर के नाटक पर बनी पहली बोलती फिल्म थी। भारत में पारसी रंगमंच पर शेक्सपियर के नाटकों के एडॉप्टेशन का मंचन शुरू हुआ। पारसी रंगमंच पर हुए शेक्सपियर के नाटकों की प्रस्तुति के फिल्मांकन से उन नाटकों पर फिल्म बनाने का सिलसिला शुरू हुआ। अध्ययन की सुविधा के लिए शेक्सपियर के नाटकों पर बनी फिल्मों को तीन समूहों में बाँटकर विचार कर सकते हैं – 1935 से पहले की फिल्में; 1935 से लेकर 1953 तक की फिल्में और 1954 से अब तक की फिल्में।

1935 से पहले बनने वाली फिल्में हैं : दिल फ़रोश, खून-ए-नाहक या हैमलेट, मीठा जहर और हठीली दुल्हन। दिल फ़रोश, शेक्सपियर के नाटक द मर्चेंट ऑफ वेनिस का पारसी थियेटर के लिए एडॉप्टेशन का फिल्मांकन थी। इसलिए इसके पटकथाकार भी एडॉप्टेशन करने वाले मेहदी हसन 'अहसान' को ही माना जा सकता है। खून ए नाहक या हैमलेट दादा आठवले के निर्देशन में 1928 में बनी थी। मीठा ज़हर, 1930 में शारदा कंपनी ने नारायण प्रसाद बेताब द्वारा सिंबलिन नाटक के एडॉप्टेशन को फिल्मांकित कर बनाई गई थी और जे॰ जे॰ मदन ने टेमिंग ऑफ द श्रू नाटक को हठीली दुल्हन के नाम से तैयार किया था।

1935 से लेकर 1953 तक के फिल्म समूह में पहली फिल्म सोहराब मोदी निर्देशित फिल्म खून का खून, हैमलेट नाटक के इसी नाम से एडॉप्टेशन की मंच प्रस्तुति का फिलमांकन थी। इसी साल निर्देशक फ्रैम सेठाना ने पेरिकल्स नाटक का एडॉप्टेशन को खुददाद नाम से फिल्मांकित किया था। 1936 में सोहराब मोदी ने ही सैद-ए-हवस नाम से शेक्सपियर के दो नाटक रिचर्ड III और किंग जॉन को मिलाकर किए गए एडॉप्टेशन पर फिल्म बनाई थी। आगा हश्र कश्मीरी द्वारा किए गए इस एडॉप्टेशन में किंग जॉन नाटक की प्रमुखता थी। जान मुरीद या काफिर इश्क नाम से 1936 में ही दूसरी फिल्म भी बनी थी। अनवरूद्दीन मखलिस द्वारा, एंटोनी और क्लियोपेट्रा नाटक का काली नागन नाम से किए गए एडॉप्टेशन को डेविड जोसेफ ने निर्देशित किया था। 1940 में, आगा हश्र कश्मीरी द्वारा तैयार किए गए मेजर फॉर मेजर नाटक के एडॉप्टेशन पर रुस्तम मोदी ने पाक दामन या शहीद-ए-नाज़ नाम से एक सुखांतक फिल्म बनाई थी। यह भी पता चला है कि जे॰जे॰मदन ने 1941 में द मर्चेंट ऑफ वेनिस नाटक पर ज़ालिम सौदागर नाम से फिल्म बनाई थी। यह फिल्म नाट्य प्रस्तुति का फिल्मांकन नहीं थी बल्कि पंडित भूषण ने इसकी पटकथा और संवाद लिखा था। 1948 में निर्देशक अख्तर हुसैन ने अंजुमन नाम से रोमियो एंड जूलिएट नाटक पर फिल्म बनाई थी। 122 मिनट की बोलती हुई ब्लैक एण्ड व्हाइट इस फिल्म को विधिवत बनाया गया था। । इसमें जूलिएट की भूमिका प्रख्यात अभिनेत्री नरगिस ने किया था। इस फिल्म का परिवेश नाटक जैसा ही था लेकिन संवाद और गाने पूरी तरह से पारसी रंगमंच से प्रभावित थे। उपरोक्त सभी फिल्मों में से एक मात्र 'खून का खून' का ही निगेटिवे 'नेशनल फिल्म आर्काइव ऑफ इंडिया, पुणे' के संग्रहालय में उपलब्ध है। शेष फिल्में अनुपलब्ध हैं।

शेक्सपियर के नाटकों पर 1953 के बाद से अब तक बनी हिन्दी फिल्में हैं : 1954 में हैमलेट पर बनी किशोर साहू की 'हैमलेट', 1968 में कॉमेडी ऑफ एरर्ज पर देबू सेन निर्देशित 'दो दूनी चार', 1982 में कॉमेडी ऑफ एरर्ज पर गुलजार निर्देशित 'अंगूर', 2003 और 2006 में मैकबेथ और ऑथेलो पर विशाल भारद्वाज निर्देशित क्रमशः 'मकबूल' और 'ओमकारा', 2010 में ए मिड समर नाइट्स ड्रीम पर शरत कटारिया निर्देशित '10 ML LOVE', 2013 में रोमियो एंड जूलिएट पर मनीष तिवारी निर्देशित 'इसक' और 2014 में हैमलेट पर विशाल भारद्वाज निर्देशित 'हैदर'। इन आठ फिल्मों में दो दूनी चार को छोड़कर सभी फिल्में पूरी तरह उपलब्ध हैं। जबकि दो दूनी चार का निगेटिव ही उपलब्ध है।

पूरी तरह से उपलब्ध सभी सात फिल्मों में, 127 मिनट की ब्लैक एंड व्हाइट हैमलेट फिल्म का निर्माण हिन्दुस्तान एहित्रा कंपनी ने किया था। निर्माता और निर्देशक थे किशोर साहू। हैमलेट की भूमिका भी किशोर साहू ने ही की थी। ऑफीलिया की भूमिका निभाई थी प्रख्यात अभिनेत्री माला सिन्हा ने। फिल्म में वही परिवेश है जो नाटक में है, लेकिन संवाद और प्रस्तुति पर पारसी रंगमंच का पूरा प्रभाव है। इस फिल्म में तीन गाने थे। लेकिन कोई कॉमिक इंटरल्युड नहीं था। नाटक के कई चरित्र फिल्म में नहीं हैं। इससे फिल्म में कहानी थोड़ी संकुचित हुई है लेकिन मूल कथ्य को क्षति नहीं पहुँचा है।

हैमलेट फिल्म के बाद की सभी फिल्मों में नाटक की कहानी को समकालीन भारतीय परिवेश में ढालकर प्रस्तुत किया गया है। हैमलेट के बाद बनी 'दो दूनी चार' फिल्म के विषय में प्राप्त सामग्रियों से यह ज्ञात हुआ है कि उसमें भी आधुनिक भारतीय परिवेश ही दिखता है। यह फिल्म, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा कॉमेडी ऑफ एरर्ज नाटक का किया गया एडॉप्टेशन 'भ्रांतिविलास' पर इसी नाम से 1963 में बनी बांग्ला फिल्म का रीमेक थी। मुख्य भूमिका में तनुजा और किशोर कुमार थे। इसके निर्माता थे विमल राय और पटकथाकार गुलजार। यह फिल्म जैसी बनी उससे गुलजार संतुष्ट नहीं थे लेकिन उन्हें इस नाटक की कहानी बहुत पसंद थी इसलिए बाद में उन्होंने इस पर अंगूर नाम से फिल्म बनाई। अंगूर फिल्म में कहानी को नाटक की संरचना से थोड़ा अलग हटकर तथा बम्बई शहर का आधार लेकर दिखाया गया है। अंगूर एक अच्छी फिल्म थी जिसे दर्शकों ने पसंद किया।

मकबूल में मैकबेथ नाटक को को मुंबई अंडरवर्ल्ड का आधार दिया गया है। 132 मिनट की यह फिल्म शेक्सपियर के नाटकों पर भारद्वाज की पहली फिल्म है, जिसे मैकबेथ नाटक का उम्दा एडॉप्टेशन माना जाता है। फिल्म में नाटक का मैकबेथ, मकबूल में बदल गया है तो किंग डंकन, अंडरवर्ल्ड डॉन अब्बा जी में; लेडी मैकबेथ, निम्मी बन गई मकबूल के प्रेमिका और अब्बाजी की रखैल। इस फिल्म में नाटक का आशय बरकरार रहा लेकिन मुख्य पात्रों के संबंध बदले गए जिससे उनके भाव भी बदल गए। नाटक के जादूगरनियों जैसा अतिमानवीय चरित्रों को दो भ्रष्ट पुलिस इंस्पेक्टर में बदल दिया गया। यह सब परिवर्तन फिल्म को बहुत विश्वसनीय बना दिया जिसे दर्शकों से ज्यादा आलोचकों की सराहना मिली। इस फिल्म को भारत से पहले 10 सितंबर 2003 को टोरंटो इंटरेनेशनल फिल्म फेस्टिवल में दिखाया गया जहाँ इसने दर्शकों को लुभाया। भारत में इसे 30 जनवरी 2004 को रिलीज किया गया। यहाँ भी इसे दर्शकों की सराहना मिली। 2004 के कान फिल्म फेस्टिवल में भी इसे दिखाया गया।

अभिनेता पंकज कपूर को, बेस्ट एक्टर (क्रिटिक) के लिए 'फिल्म फेअर' अवार्ड और बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर के लिए 'नेशनल फिल्म अवार्ड' मिला। यह फिल्म को दर्शकों से ज्यादा आलोचकों को पसंद आई।

शेक्सपियर के नाटक पर अगली फिल्म विशाल भारद्वाज ने ही 2006 में ओमकारा नाम से बनाई। 155 मिनट की इस फिल्म में उन्होंने ऑथेलो नाटक की कहानी को पश्चिमी उत्तर प्रदेश की आपराधिक पृष्ठभूमि में दिखाई है। फिल्म के लगभग सभी मुख्य पात्र नाटक के पात्रों का सीधा प्रतिबिंब दिखाई पड़ते हैं और उनके बीच का संबंध भी वैसा ही है। इस फिल्म को 2006 के कान्स फिल्म फेस्टिवल, (Cannes film festival), काइरो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल (Cairo International film festival), कारा फिल्म फेस्टिवल (Kara film festival) और एशियन फेस्टिवल ऑफ फर्स्ट फिल्म (Asian Festival Of First Film) में दिखाया गया, जहाँ इसे कई अवार्ड मिले। भारत में इसे तीन नेशनल अवार्ड और सात फिल्म फेअर अवार्ड मिले।

ओमकार के बाद 2010 में शरत कटारिया ने शेक्सपियर के नाटक ए मिड समर नाइट्स ड्रीम पर 10 ML LOVE नाम से फिल्म बनाई। इस फिल्म में एक पंजाबी परिवार में होनेवाली शादी का आधार लेकर रोमांटिक नाटक 'ए मिड समर नाइट्स ड्रीम' की कहानी दिखाने का प्रयास किया गया है। शेक्सपियर के नाटकों के मंचन का अच्छा अनुभव रखनेवाले शरत कटारिया, अच्छी फिल्म नहीं बना सके। इस फिल्म की कहीं चर्चा नहीं हुई।

शरत कटारिया के बाद, नए डायरेक्टर मनीष तिवारी ने वर्ष 2013 में पूर्वी उत्तर प्रदेश की आपराधिक पृष्ठभूमि का आधार लेकर शेक्सपियर के नाटक रोमियो एंड जूलिएट पर 'इसक' नाम से फिल्म बनाई। फिल्म में नाटक की कहानी, बनारस शहर के दो बालू माफिया की आपसी रंजिश में दिखाई गई है तथा इसमें आपराधिक-राजनैतिक गठजोड़ और नक्सलियों की स्थिति को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। लगभग ढ़ाई घंटे की फिल्म में पूरी परिघटना को नाटक के समांतर और उसी क्रम में रखने का प्रयास किया गया। कई कमजोर पक्षों के कारण यह फिल्म सफल नहीं हो सकी।

2014 में विशाल भारद्वाज ने फिर से शेक्सपियर को पर्दे पर उतारा। इस बार शेक्सपियर के नाटक हैमलेट की कहानी का उपयोग, बशरत पीर का उपन्यास कर्फ्यूड नाइट के सहयोग से, कश्मीर की भीषण समस्या को प्रभावशाली तरीके से दिखाने के लिए किया गया। उन्होंने

बशरत पीर के साथ मिलकर फिल्म की पटकथा लिखी और शीर्षक दिया 'हैदर'। हैदर ने सफलता के नए प्रतिमान स्थापित कर दिए। इस फिल्म को विश्व भर में रिलीज किया गया जहाँ आलोचकों ने जमकर इसकी प्रशंसा की। 19वें बुसान फिल्म फेस्टिवल में इसे दिखाया गया। यह भारत की पहली फिल्म बनी जिसे रोम फिल्म फेस्टिवल में 'पिपल्स च्वाइस अवार्ड' मिला। मीडिया में भी इस पर बहुत चर्चा हुई। पटकथा, निर्देशन, अभिनय, गीत-संगीत आदि, सभी स्तर पर इस फिल्म को उत्कृष्ट माना गया। भारत में इसे बेस्ट प्लेबैक सिंगर, बेस्ट डायलॉग, बेस्ट कोरियोग्राफी, बेस्ट कस्ट्यूम डिजायन और बेस्ट म्यूजिक के लिए, कुल पांच फिल्म फेयर अवार्ड मिले। यह फिल्म भारत में शेक्सपियर के नाटकों पर बनी अब तक की सबसे सफलतम फिल्म मानी जाती है।

शेक्सपियर के नाटकों पर अब तक बनी सभी उन्नीस हिन्दी फिल्मों में से केवल चार फिल्में : अंगूर, मकबूल, ओमकारा और हैदर ही सफल हुई हैं। इनमें से भी अंगूर को औसत दर्जे की ही सफलता प्राप्त है। विशाल भारद्वाज की तीनों सफल फिल्मों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने नाटकों की कहानियों का उपयोग, नाटक से पूरी तरह अलग हटकर दूसरे समय में, दूसरे स्थान पर, दूसरी समस्या दिखाने के लिए किया है। उन्होंने फिल्म अवयवों को संतुलित और तकनीकी का कुशलता पूर्वक उपयोग किया है। इन फिल्मों से शेक्सपियर के नाटकों की प्रासंगिकता नए संदर्भों में सत्यापित हुई है। शेक्सपियर की लोकप्रियता, उनके नाटकों की विशेषताएँ, उनकी सर्वकालिक प्रासंगिकता और उनके नाटकों पर बनी विशाल भारद्वाज की तीनों फिल्मों की सफलता के कारण यह उम्मीद की जाती है कि भविष्य में भी हिन्दी फिल्म इन्डस्ट्री में उनके नाटकों पर फिल्में बनती रहेगी।